P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-11* July- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में स्त्रियों का सशक्तिकरण ही भारत का आदर्शचरित्र है

According to Swami Vivekananda, Empowerment of Women is the ideal Character of India

Paper Submission: 00/00/2020, Date of Acceptance: 00/00/2020, Date of Publication: 00/00/2020

विवेक कुमार
प्रोफसर,
अध्यक्ष,
स्वामी विवेकानंद चेयर,
सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ जम्मू,
सांबा, बागला,
जम्मू और कश्मीर, भारत

अमर सिंह कश्यप
सहायक आचार्य
वनस्पति विभाग,
कार्यक्रम अधिकारी,
राष्ट्रीय सेवा योजना,
मुलतानीमल मोदी कालिॅज,
मोदीनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

स्वामी विवेकानन्द ने स्त्रियों को सभ्य, सांस्कारिक एवम् राष्ट्रीय विकास के लिए मुख्य केन्द्र माना गया है। इस लिए स्त्रियों को पूर्ण शिक्षित, प्रशिक्षित एवम् संस्कारों से ओत प्रोंत होना चाहिए। भारत में जब भी स्त्रीयों को मुख्य धारा से अलग रखा गया तब से समाज और राष्ट्र का पतन स्वमेव होता रहा है। किसी भी महान राष्ट्र के लिए उसकी माताओं को व स्त्रियों को पूर्ण शिक्षित एवम् संस्कारों से परिपूर्ण होना चाहिए। भारत की नारियों ने हर काल खण्ड़ में क्रान्तिकारी भूमिकाऐं निभाई है जो हमारे इतिहास में गोरव पूर्ण स्थान रखती है। जिनमें सीता, अहिल्या, चॉद बीबी, महरानी लक्ष्मीबाई आदि ने इतिहास में अपना नाम सर्वोच्च स्थान पर बनाया है।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते यत्र देवता:"।। मनु ।।

According to Swami Vivekanand women are the main epicenter of any society. They are the axis of power, culture, civilized society and national development. Therefore, the woman should be well cultured and educated. Whenever a society ignored the importance and rights of a woman, the society faced the detoriation. Such a nation also faced a huge problem. A nation becomes great and strong when the women are educated as well cultured. They have all rights and behold in full swing. Indian women played a vital role in each and every era who had always high position in history their society. They set the icons in the coutry with high efficiency and ideality in each era as Sita, Aahilia, Chand Bibi, Maharani Laksmi bai and others.

"Where the women are worshiped God resides there" !! Manu!!

मुख्य शब्द :सशक्तिकरण, सहनशीलता, आदर्शसमाज, स्वामी विवेकानन्द, संस्कार, श्रेष्ठ, संस्कृत, स्त्री माँ।

Empowerment, Tolerance, Ideal Society, Swami Vivekananda, Sanskar, Shrestha, Sanskrit, Female Mother.

प्रस्तावना

भारत में मां परिवार का केन्द्र है और हमारा उच्चतम आदर्श है। माँ हमारे लिए ईश्वर की प्रतिनिधि है क्योंकि ईश्वर ब्रह्मंड की मां है।एक नारी ऋषि ने ही सब से पहले ईश्वर की एकता को प्राप्त किया और इस सिद्वान्त को वेदों की प्रथम ऋचाओं में कहा। आकाश तथा पाताल में या कहीं भी भगवान है या नही शायद किसी ने देखा नही परन्तु धरती पर यदि कोई घूमता–फिरता प्रत्यक्ष आंखों के सामने कोई भगवान है तो वो 'मां' है[1]।

हमारे परिवार में 'मां' ही ईश्वर है।इस संसार में एकमात्र शास्वत प्रेम, निःस्वार्थ प्रेम देखते हैं माँ सहनशीलता ओर स्नेह का ही एक रूप है। मां के प्रेम से बढ़कर और कौन सा प्रेम भगवद् प्रेम का प्रतीक हो सकता है? अतएव एक हिन्दु के लिए तो मां ही पृथ्वी पर ईश्वर का अवतार है। मां होने पर असाधारण उतरादायित्व लेना पड़ता है।

मां स्वयमू में खाती है। भोजन तैयार होने पर वह प्रथम भाग अतिथि एंव गरीबों के लिए रखती है दूसरा पशुओं के लिए, तीसरा बच्चों के लिए, चौथा पति के लिए और अन्तिम 'मां' के लिए होता है। पश्चिम में स्त्री पत्नी है। वहां पत्नी के रूप में स्त्रीत्व का भाव केन्द्रीत है। भारत में जन साधारण समस्त स्त्रीत्व को मातृत्व में ही केन्द्रीभूत मानते हैं[3 व 4]। पाश्चात्य देशों में गृह की स्वामिनी और शिक्षिका पत्नी है, भारतीय ग्रहों में घर की स्वामिनी और रक्षक

माता है। पाश्चात्य घरो में यदि माता हो भी, तो उसे पत्नी के अधीन रहना पड़ता है, क्योकि घर पत्नी का है। हमारे घरों में माता सदैव रहती और पत्नी अनिवार्यतः उसके अधीन होती है। आदर्शो की इस भिन्नता पर ध्यान दीजिए[5]।

अध्ययन का उददेश्य

वर्तमान शोधपरक विचार का उददेश्य स्वामी विवेकानन्द को मातृशक्ति के प्रति आदर्श विचार एवम् भारतीय सास्कृति में स्त्रीयों की केन्दीय भूमिका पर प्रकाश डालना है। पुरातन समय से लेकर आज तक भारतीय महिलाओं की सांस्कृतिक, मातृत्व व स्नेह की प्रतिमूर्ति के रूप में पाया गया है। जहा एक तरफ स्नेह वात्सल्य स्त्री का गुण है वहीं दूसरी तरफ दुर्गा शक्ति का भी रूप है। झाँसी की रानी, चाँद बीबी, गार्गी आदि इतिहास में चमकने वाले सितारे है। पुरातन शिक्षा में जो अंधकारमय समय रहा वो स्त्रीयों को शिक्षा–दीक्षा से वंचित करना था। लेकिन जब तक भी स्त्रीयों ने समाज को दिशा दी है व इतिहास में अपनी उपस्थति दर्ज कराई है।

अध्ययनात्मक विवेचना

भारतीय नारीत्व के आदर्श की सर्वोत्म अभिव्यक्ति सीता माता है अर्थात सीता चरित्र आद्वितीय है। यह चरित्र सदा के लिए एक ही बार चित्रित हुआ है। राम तो कदाचित अनेक हो गये हैं किन्तु सीता और नही हुई।भारतीय स्त्रियों को जैसा होना चाहिए, सीता उनके लिए आदर्श हैं। स्त्री–चरित्र के जितनें भारतीय आदर्श हैं,वे सब सीता के ही चरित्र ये उत्पन्न हुए हैं और समस्त आर्यव्रतभूमि में सहस्त्रों वर्षो से स्त्री–पुरूष ,बालक की पूजा पा रही हैं। महिमामयी सीता, स्वंय शुद्धता से भी शुद्ध धेर्य तथा सहिष्णुता का सर्वोच्च आदर्श सीता सदा इसी भाव से पूंजी जांएगी जिन्होंने अविचलित भाव से ऐसा महा दुखः का जीवन व्यतीत किया ,वही साधवी, सदा शुद्ध स्वभाव सीता, आदर्श पत्नी सीता, मनुष्य लोक की आदर्ष, देवलोक की भी आदर्श नारी पुण्य–चरित्र सीता सदा हमारी राष्ट्रीय देवी बनी रहेंगी।

भारत में जो कुछ पवित्र है, विशुद्ध है,जो कुछ पावन है उस सब का 'सीता' शब्द से बोध0 हो जाता है। नारी में जो मातृत्व व नारीजनोचित गुण माने गये हैं, 'सीता' शब्द उन सबका परिचायक है। सीता भारतीय समाज की एक आदर्श नारी है इसलिए ब्राह्मण जब किसी कुल–वधु को आर्शीवाद देते हैं, तो कहते हैं–'सीता बनो'। वे सब सीता की सन्तान है। जीवन में उनका एकमेव प्रयत्न यही होता है कि वह सीता बनें–सीता सी शुद्ध, धोर और सर्वसहा, सीता सी पति परायण और पतिव्रता बनें। जीवन में सीता ने इतने कष्ट सहे, इतनी वेदनांए सही किन्तु राम के विरूद उनके मुंह से एक कठोर शब्द न निकला। वे उसे अपना कर्तव्य जानकार करती रहती हैं[6]। सीता के निर्वासन के घोर अन्याय पर विचार करो। पर सीता ने यह भी सहलिया–उनके ह्दय में लेशमात्र भी कटुता उत्पन्न नही हुई। यही भारतीय आदर्श है। भगवान बुद्ध ने कहा है, 'यदि तुम्हें कोई आहत करता और तुम उसे प्रतिकार में आहत करने के लिए अपना हाथ उठाते हो, तो इससे तुम्हारे पाव को तो आराम नही होगा। इससे संसार के पापों में एक और वृद्धि हो जाएगी[7]।'

स्त्रियां भी सर्वोत्तम ज्ञान की समान अधिकारी

ऐसी अन्य कोई पौराणिक कथा नही है जिसने सीता के चरित्र की भांति पूरे भारतीय राष्ट्र को आच्छादित और प्रभावित किया हो, उसके जीवन में इतनी गहराई तक प्रवेश किया हो जो जाति के नस–नस में उसके रक्त की एक एक बूंद में इतनी प्रवाहित हुई हो कि यह देश वही हैं जहां सीता और सावित्री का जन्म हुआ था। पवित्र भूमि भारत के अतिरिक्त विश्व में कही और अभी तक स्त्रियों में ऐसा चरित्र, सेवाभाव, स्नेह, दया, दृष्टि और भक्ति पायी जाती हो[8]। हम महिलाओं की एक दूसरी श्रेणी को लेते हैं।इस मृदु हिन्दुजाति ने समय समय पर योद्धा वीरांगनाओं की उत्पति की है। आप में से कुछ ने शायद उस स्त्री (झांसी की रानी लक्ष्मी बाई) के बारे में सुना होगा जो सन् 1857 की क्रान्ति के समय, अंग्रेजो के विरूद्ध लड़ी एंव दो वर्षो तक अपने राज्य, सैन्य दल इत्यादि का संचालन करते हुए सदैव आगे बढ़कर आक्रमण करती रही। जग की यही महारानी लक्ष्मीबाई एक ब्राह्मण स्त्री थी[9]। स्वामी विवेकानन्द इनके बारे में कहते है कि मेरे परिचित एक सज्जन के तीन पुत्र इस संग्राम में शहीद हुए थे। वे उतेजनाहीन रहते हुए अपने इन पुत्रों की बात कर सकते थे, किन्तु इस स्त्री (रानी लक्ष्मी बाई) के समबन्ध में बोलते हुए उनकी आवाज़ रोमान्चित हो उठती थी। उनकी मतानुसार वे कोई आम स्त्री नही बल्कि साक्षात देवी थी। इन वृद्व अनुभवी सिपाही का मानना था कि उन्होंनें आजीवन इस रानी से बढ़िया सेना का संचालन नही देखा[9 व 10]।

चांद बीबी अन्यथा चांद सुल्ताना (1556–1599) की कहानी भारत में प्रखात है। वे गोलकौन्डा की रानी थीं। जहां उस समय हीरे की खदाने हुआ करती थी। महीनो तक उन्होंने स्वाराज्य की रक्षा की। अन्ततः दीवार में एक विच्छेद किया गया। जब अंग्रेज सैना ने भीतर प्रवेश करने की कोशिश की, तो कवच एंव शास्त्रों से सुसज्जित चांद बीबी ने उनका डटकर सामना किया और अेग्रेज सिपाहियों को पीछे हटने पर मजबूर की दिया[11 व 12]। राजनीति, भूखंड़ प्रबंधन, राज्य संचालन सहित युद्ध में भी स्त्रियों ने स्वंय को पुरूष तुल्य तो सिद्व किया ही है। अवसर पाने पर सदैव ही स्त्रियों ने पुरूषों जितनी ही योग्यता दिखाई है। यही नही इसके साथ ही वे यह गुण समपन्न भी है कि इन क्षेत्रों में उनका पतन कदाचित ही होता हैं। अपने स्वाभाविक जन्मजात गुणों के कारण वे नैतिक आदर्श को बनाए रखती हैं। अतः अपने राज्य के राज्यपाल एंव शासक के रूप में भारत में तो पुरूषों की तुलना में स्त्रियां कई गुणा श्रेष्ठ सिद्व होती रही है।इस तथ्य की पुष्टि जान स्टुयर्ट मिल भी करते है[13]।

किस शास्त्र मेंऐसी बात है कि स्त्रियां ज्ञान–भक्ति की अधिकारिणी नही होगी? भारत का पतन उसी समय से प्रारंभ हुआ जब से ब्राह्मण पण्डितों ने ब्राह्मणोतर जातियों को वेदपाठ का अनाधिकारी घोषित किया और साथ ही स्त्रियों के भी सभी अधिकार छीन लिए गए अन्यथा वैदिक युग में, उपनिषद् युग में मैत्रेयी, गार्गी आदि प्रातः स्मरणीय स्त्रियां व्रह्मविचार में ऋषितुल्य हो गई हैं[14]। हज़ार वेदज्ञय ब्राह्मणों की सभा में गार्गी ने गर्व के साथ याज्ञवल्क्य को ब्राह्मज्ञान के शास्त्रार्थ के लिए

आहवान किया था। इन सब आदर्श विदुषी स्त्रियों को जब उस समय अध्यात्म का ज्ञान था तथापि आज भी स्त्रियों को वह अधिकार क्यों नहीं दिए गए ? एक बार जो हो चुका है, वह फिर भी हो सकता है। क्योकि इतिहास की पुनरावृत हुआ करती है। समय आने पर यदि कोई भी स्त्री ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर सकी तो उसकी प्रतिभा से हज़ारों स्त्रियां जाग उठेंगी और देश तथा समाज का कल्याण होगा[15व16]।

स्त्री अत्यन्त आदर्श व्यवहार की अधिकारी

हमारे देश में पुरूष और स्त्रियों में इतना अन्तर क्यों समझा जाता है, यह समझना कठिन है। वेदान्त शास्त्र में तो कहा है कि एक ही चित् सत्ता सभी में उपस्थित है। तुम लोग स्त्रियों की निंदा ही करते हो। उनकी उन्नति के लिए क्या किया? स्मृति आदि लिखकर, नियम नीति में बांधकर इस देश के पुरूषों ने स्त्रियों को एक दम बच्चा पैदा करने की मशीन बना दिया हैं। महामाया की साक्षात मूर्ति–इन स्त्रियों का उत्थान न होने से क्या तुम लोगों की उन्नति सम्भव है? किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोतम परिणाम वहां की स्त्रियों के साथ होने वाला सद् व्यवहार हैं। प्राचीन यूनान में पुरूष और स्त्री की स्थिति में कोई भी अन्तर नही था, समानता का विचार प्रचलित था इसलिए वो देश तेजी से प्रगति पथ पर है।[17,18,19]

'हम स्त्री और पुरूष में कोई भेद न कर हमें यह सोचना चाहिए कि हम मानव हैं। जो कि एक दूसरे की सहायता करने और एक दूसरे के काम आने के लिए जन्में हैं। स्त्रियों की पूजा करके सभी जातियां बड़ी बनी हैं[18]। जिस देश में तथा जाति में स्त्रियों की पूजा नही होती है, वो कभी बड़ी नही बन सकती और न कभी बन सकेगी। तुम्हारी जाति का जो इतना पतन हुआ, उसका मुख्य कारण है इन सब स्त्रीं शक्ति का अपमान है। मनु ने कहा है–*यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः यत्रोतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः* अर्थात जहां स्त्रियों का आदर होता है वहाँ देवता प्रसन्न होते हैं और जहां उनका सम्मान नही होता है, वहा समस्त कार्य और प्रयत्न असफल हो जाते हैं। जहां पर स्त्रियों का सम्मान नही होता, उस समाज व राष्ट्र की उन्नति की आशा कदापि नही की जा सकती[19]।

किसी भी देश–राष्ट्र की प्रगति का सर्वोतम परिमाण है, वहां की महिलाओं के साथ होने वाला व्यवहार। प्राचीन यूनान में पुरूष और स्त्री की स्थिति में कोई भी अन्तर नही था जहाँ समानता का विचार प्रचलित था। भारत में 'स्त्री शिक्षा' को लेकर जहां देश में बहुत ही विसमता है[20]। शिक्षा का अर्थ केवल मानसिक ही नहीं है नाहि केवल शब्दों का रटना मात्र है। यह तो व्यक्तियों को ठीक तरह से और दक्षतापूर्वक इच्छा करने का प्रशिक्षण देना है। इस प्रकार हम भारत की आवश्यकता के लिए महान् निर्भीक नारियां तैयार कर सकेगें। ऐसी नारियां जो संघमित्रा, लीला, अहिल्याबाई और मीराबाई की परम्पराओं को चालू रख सकें। ऐसी नारियां जो वीरों की मातांए होने के योग्य हों, इसलिए कि वह पवित्र और आत्मत्यागी हैं और उस शक्ति से भी शक्तिशाली हैं, जो भगवान के चरण छूने से आती है[21व22]। ऐसे योग्य आधार के प्रस्तुत होने पर भी तुम उनकी उन्नति न कर सको। इनको ज्ञानरूपी ज्योति दिखाने का कोई प्रबन्ध नही किया गया। उचित रीति से शिक्षा पाने पर यह आदर्श बन सकती हैं।'' निश्चय ही उनकी समस्यांए बहुत सारी हैं जिन्हें गंभीरता से दूर करना होगा[23]।

स्त्री शिक्षा

''मैं धर्म की शिक्षा का अन्तरतंम मानता हूं'' ऐसा स्वामी जी ने गंभीरता से कहा,''ध्यान रखिए कि धर्म के विषय में, मैं अपनी अथवा किसी दूसरे की राय की बात नही कहता हूँ कि शिक्षक को चाहिए कि वह विद्यार्थिनी को उसके आरम्भिक बिन्दुओ से लेकर उसे योग्य बनाने तक की सभी रास्ते अपनाऐं जाऐं ताकि वह स्वंय अपने मार्ग को विकसित कर सकें[24,25व26]। अब धर्म को आधार बनाकर स्त्री–शिक्षा का प्रचार करना होगा। धर्म के अतिरिक्त दूसरी शिक्षांए गौण होगी। धर्म शिक्षा, चरित्र–गठन तथा ब्राह्मचर्य पालन इन्हीं के लिए तो शिक्षा की आवश्यकता है। वर्तमान काल में आज तक भारत में स्त्री–शिक्षा का जो प्रचार हुआ है, उसमें धर्म को ही गौण बनाकर रखा गया है । क्या तुम अपने देश की महिलाओं की अवस्था सुधार सकते हो ? ताकि तुम्हारे कुशलता की आशा की जा सकती है, नही तो तुम ऐसे ही पिछड़े पड़े रहोगे।''[26व27] शिक्षा देकर छोड देना होगा। उसके पश्चात् वे स्वंय ही सोच–समझ कर जो उचित होगा करेंगी। हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिससे चरित्र–निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े बुद्वि विकास हो और देश की युवतियां भी युवकों की तरह अपने पैरों पर खडा होना सीखें। पर अब दूसरी बातों के साथ–साथ उन्हें बहादुर भी बनना चाहिए। वर्तमान समय में उनके लिए आत्म रक्षा करना सीखना भी बहुत जरूरी हो गया है। देखो झांसी की रानी कैसी महान थी[28व29]! सबसे पहले अपनी स्त्रियों को शिक्षित करने की व्यवस्था करो और उन्हें स्वंय की चिन्ता करने दो। तत्पश्चात् वे स्वंय ही तुम्हें बता देंगी कि उन्हें किन–किन समाज–सुधारों की आवश्यकता है[30]।

स्त्री शिक्षा चारित्रिक निर्माण केंद्रित हो

हिन्दु स्त्रियां बहुत ही आध्यत्मिक और धार्मिक होती हैं। कदाचित् संसार की सभी महिलाओं से अधिक। यदि हम उनकी इन सुन्दर विशिष्टताओं की रक्षा कर सकें और साथ ही उनका बौद्विक विकास भी कर सकें तो भविष्य की हिन्दु नारी संसार की आदर्श नारी होगी। आज के युग की आवश्यकतांए देखते हुए, यह अत्यन्त आवश्यक प्रतीत होता है कि कुछ महिलांए 'सन्यासरत' जीवन के आदर्शो का पालन करने के लिए शिक्षित की जांए, जिससे कि वे आजन्म कौमार्य व्रत धारण करें। आदिकाल से जिनकी नस-नस में सतीव्रत भरा है, उन भारतीय महिलाओं के लिए इसमें कोई कठिनता नही है। इसके साथ–साथ महिलाओं को विज्ञान एंव अन्य विषय, जिससे कि केवल उनका ही नही, अन्य लोगों का भी हित हो, सिखाये जांए। भारतीय नारी प्रसन्नता से और सफलता पूर्वक कोई भी विषय सुगमता से सीख लेगी। हमारी मातृभूमि के उत्थान के लिए आज ऐसे ही पुण्य संकल्प, पवित्रात्मा, ब्रह्मचार्यों तथा ब्रह्मचारिणियों की आवश्यकता हैं[31]। भारतीय नारी को वो सब कुछ सिखाओ

जो पुरूष के लिए आवश्यक है। भारत के अति प्राचीन काल में तथा स्वर्णकाल में भारतीय नारी हर प्रकार से शिखर पर रही है। उसके शिखर पर न रहने से ही भारत की यह हालत हुई है। युद्व–स्तर पर पुनः एक बार यह प्रयास करना होगा। भारतीय नारी के उत्थान के साथ ही भारत माता का भी कल्याण कर सकेंगे[32]।

स्त्री–जीवन के इस आदरणीय स्थान को प्राप्त करने के लिए स्त्री के नारीत्व का पूर्ण विकास होना आवश्यक है और वह बात वस्तु,जो नारीत्व को पूर्ण करने के लिए तथा नारी को नारी बनाने के लिए अपेक्षित है मातृत्व एवम् प्राप्त होने तक उससे अपेक्षा करनी चाहिए, तदुपरान्त उसे इसपद का अधिकार प्राप्त होगा। हिन्दु संस्कृति के अनुसार स्त्री–जीवन का महान उद्देश्य माता का गौरवमय पद प्राप्त करना ही है, परन्तु आज कितना परिवर्तन हो गया है। मेरे माता–पिता ने कितने दिनो तक भगवान से प्रार्थना की थी कि उन्हें एक सन्तान प्राप्त हो। भारत में माता–पिता प्रत्येक बालक के जनम के लिए ईश्वर से प्रार्थना–याचना करते है। 'आर्य' की परिभाषा लिखते हुए मनु महाराज कहते हैं कि वही सन्तान आर्य है जो माता–पिता द्वारा ईश्वर की अराधना करने के उपरान्त जन्म लेती हैं। बिना प्रार्थना के उत्पन्न प्रत्येक सन्तान मानो अधर्म से उत्पन्न सन्तान है। इस प्रकार की सन्तानो से इस संसार में अधिक क्या आशा की जा सकती है? प्रत्येक बच्चे के लिए माता–पिता को प्रार्थना करनी चाहिए। भारतीय नारी गुण सम्पन्न और सुयोग्य होते हुए भी भारतवासी स्त्री को उन्नत नही बना सके। भारत में हमने उसे ज्ञानलोक प्रदान करने का प्रयत्न करना चाहिए। भारतीय स्त्री को यदि उचित शिक्षा मिले, तो वह संसार की सर्वश्रेष्ठ व आदर्श नारी बन सकती है।

एक प्रश्न के उत्तर में स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि हां महिलाओं का अत्यन्त गौरवमयी अतीत रहा है विशेषकर भारत में।''मैनें पृथ्वी के दोनो गोलार्द्धों की यात्रा की है। मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि जिस जाति ने सीता को जन्म दिया भले ही यह कल्पना मात्र हो–उस जाति में स्त्री जाति के प्रति इतना सम्मान तथा श्रद्धा है कि उसकी तुलना संसार के अन्य किसी भाग से नही की जा सकती। पाश्चात्य स्त्रियां ऐसे कई कानूनी बन्धनों से जकड़ी हुई है, जिससे भारतीय स्त्रियां सर्वथा मुक्त एंव अपरिचित हैं। भारतीय समाज में गुण और दोष दोनो विद्यमान हैं और यही स्थिति पाश्चात्य समाज की भी है। जहां तक ग्रहस्थ जीवन का सम्बन्ध है, मैं बिना किसी संकोच के कह सकता हूँ कि भारतीय प्रणाली में अन्य देशों की अपेक्षा सद्गुण हैं। भारतीय स्त्रियों के समक्ष भी कई समस्यांए हैं उन्हें भी कई गंभीर समस्यांए सुलझानी शेष हैं परन्तु इन में से एक भी ऐसी नही जो 'शिक्षा' द्वारा न सुलझायी जा सके। परन्तु सच्ची शिक्षा की धारना अभी तक हममें से किसी को भी नही।''

एक दूसरे प्रश्न के उत्तर में स्वामी विवेकानन्द ने सच्ची शिक्षा की परिभाषा दी। उन्होंने केवल इतना ''कहा कि परिभाषांए देने के विरूद्ध हूँ। परन्तु इस सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि सच्ची शिक्षा वह है, जिससे मनुष्य की मानसिक शक्तियों का विकास है, जिससे वह स्वंयमेव स्वतन्त्रतापूर्वक विचार कर ठीक–ठीक निश्चय एंव निर्णय कर सके। हम चाहते है भारत की स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जाए, जिससे वह निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्तव्य को भली भांति निभा सके और संघमित्रा, लीला, अहिल्याबाई और मीराबाई आदि भारत की महान देवियों द्वारा चलायी गयी परम्परा को आगे बढ़ाया जा सके एंव वीरव्रसू बन सकें। भारत की स्त्रियां पवित्रता और त्याग की मूर्ती हैं क्योंकि उनके पास वह बल और शक्ति है जो सर्वशक्तिमान परमात्मा के चरणों में सर्वस्व अर्पण करने से प्राप्त होती है।''

''स्वामी जी का अपने देश की स्त्रियों के लिए वही संदेश है जो पुरूषों के लिए है। भारत में भारतीय धर्म में पूर्ण श्रद्वा एंव विश्वास रखो। तेजस्वी बनो, अपने गौरवशाली भविष्य में विश्वास रखो। अपने जीवन एंव धर्म की महता पर विश्वास रखो, न कि लज्जा और स्मरण रखो कि हिन्दू जाति को संसार के अन्य देशों से कुछ ग्रहण करना तो अवश्य है, परन्तु उसे संसार को देना है, वह लेने की अपेक्षा सहस्त्रगुण अधिक है।''हम चाहते हैं भारत की स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जाए, जिससे वे निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्तव्य को भलीभांति निभा सकें और संघमित्रा, लीला, अहिल्याबाई और मीराबाई आदि भारत की महान देवियों द्वारा चलायी गई। इस परम्परा को आगे बढ़ा सकें एंव वीरप्रसु बन सकें। भारत की स्त्रियां पवित्रता व त्याग की मूर्ती हैं क्योकि उनके पास वह बल और शक्ति है जो सर्व शक्तिमान परमात्मा के चरणों में सम्पूर्ण आत्म समर्पण से प्राप्त होती है।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि धर्म ही शिक्षा का मेरूदण्ड है। स्वामी जी के शब्दो में, ''धर्म, शिल्प, विज्ञान, गृहकार्य, स्वास्थ्य, सीना–पिरोना आदि सब विषयों का स्थूलमर्म सिखलाना उचित है। हर विषय में उनकी आंखे खोल देना उचित है। छात्राओं के सामने आदर्श नारी चरित्र सर्वदा रखकर त्याग स्वरूपव्रत में उनका अनुराग उत्पन्न करना होगा। सीता, सावित्री, दमयन्ती, लीलावती, रवना मीराबाई आदि के जीवन चरित्र कुमारियों को समझाकर उन्हें अपने जीवन को इसी प्रकार गढ़ने का उपदेश देना होगा। किन्तु स्मरण रहे कि सर्वसाधारण में और स्त्रियों में शिक्षा का प्रसार हुए बिना उन्नति का कोई उपाय नही। इसलिए कुछ ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणियां बनाने की मेरी इच्छा है। ब्रह्मचारीगण समय पर सन्यास लेकर देश–प्रदेश, गांव–गांव जायेंगे तथा सर्वसाधारण में शिक्षा का प्रसार करेंगे और ब्रह्मचारिणियां स्त्रियों में विद्या का प्रसार करेंगी। परन्तु यह सब काम अपने ही देशके ढंग पर होना चाहिए। पुरूषों के लिए जैसा शिक्षा केन्द्र बनाना होगा, वैसा ही स्त्रियों के निमित भी करना होगा। शिक्षित और सच्चरित्र ब्रह्मचारिणियां इस केन्द्र में कुमारियों को शिक्षा दिया करेंगी। पुराण, इतिहास, ग्रहकार्य, शिल्प, ग्रहस्थी के सारे नियम इत्यादि की शिक्षा वर्तमान विज्ञान की सहायता से देनी होगी। कुमारियों को धर्मपरायण और नीतिप्रारयण बनाना होगा। जिससे वे भविष्य में अच्छी गृहणी हो, वही करना होगा। इन कन्याओं से जो सन्तान उत्पन्न होगी, वे इन विषयों में और भी उन्नति कर सकेगी। जहां माता शिक्षित और निति

परायण है, वहीं बड़े लोग जन्म लेते हैं। सर्वसाधारण को जगाना होगा तभी तो भारत का कल्याण होगा।

स्वामी जी–''मेरे जीवन की यही महत्वाकांक्षा कि इस प्रकार के साधान निर्माण किये जाए जिनसे भारत के घर–घर में उच्च ओर महान आर्दश शिक्षा पहुंच सकें। उसके उपरान्त स्त्री–पुरूष स्वता अपने भविष्य का निर्माण कर सकते हैं''। महिलाओं के लिए एक मठ निर्माण करने के भविष्य में –स्वामी कहते हैं,'' जगत का कोई भी महान कार्य त्याग के बिना नही हुआ हैं। वट वृक्ष का अंकुर देखकर कोन समझा सकता है कि समय आने पर वह एक विराट वृक्ष बनेगा ? अभी तो इसी रूप में मठ की स्थपना करूंगा। फिर देखना एक आध पीडी के बाद दुसरे सभी देशवासी इस मठ की कदर करने लगेंगे।ये जो विदेशी स्त्रिययां मेरी शिष्य बनी हैं, ये ही इस कार्य में जीवन उत्सर्ग करेंगी। समय आने पर इनके प्रयास से देश उज्जवल हो उठेगा।

स्त्रियों के लिए आप किस प्रकार का मठ अथवा शिक्षण संस्थान बनाएगें ? इसके उत्तर में स्वामी जी ने कहा ''गंगा जी के उस पार विस्तृत भूमि खंड लिया जाएगा तथा उसमें अविवाहित बालिकांए एंव विद्यवा ब्राह्मचारिणियां रहेंगी। साथ ही ग्रहस्त की स्त्रियां भी बीच बीच में आकर ठहर सकेंगी। इस मठ से पुरूषों का किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रहेगा। पुरूष मठ के वृद्व साधुगण दूर रहकर स्त्री मठ का काम चलायेंगे। स्त्री मठ में लड़कियों का एक स्कूल होगा। उसमें धर्मशास्त्र, साहित्य, संस्कृत व्याकरण और साथ ही थोंड़ी बहुत अंग्रेजी भी सिखाई जायेगी। सिलाई का काम, रसोई बनाना, घर गृहस्थी के सभी नियम तथा शिशु पालन के सामान्य विषयों की भी शिक्षा दी जायेगी। साथ ही जप, ध्यान, पूजा, ये सब तो शिक्षा दी जायेगी। साथ ही जप, ध्यान, पूजा, ये सब तो शिक्षा के अंग रहेंगे ही। जो स्त्रियां घर छोड़कर हमेशा के लिए वहां रहने आएगी। उनके लिए भोजन–वस्त्र का प्रबन्ध मठ की ओर से किया जायेगा। जो ऐसा नही कर सकेंगी, वो इस मठ में दैनिक छात्राओं के रूप में आकर अध्ययन करेंगी। यदि सम्भव होगा तो मठ के अध्यक्ष की अनुमति से वे यहां पर रहेंगी और जितने दिन रहेंगी वे भोजन भी प्राप्त कर सकेंगी। स्त्रियों से ब्राह्मचार्य का पालन करने के लिए वृद्धा ब्राह्मचारिणियां नई छात्राओं की शिक्षा का भार अपने ऊपर लेंगी। इस मठ में 5–7 वर्ष तक शिक्षा प्राप्त कर लड़कियों के अभिभावक गण उनका विवाह कर सकेंगे। यदि कोई छात्रा अधिकारिणी योग्य समझी जायेगी तो अपने अभिभावकों की सहमति लेकर वह यहां पर चिरकौमार्य–व्रत का पालन करती हुई ठहर सकेंगी जो स्त्रियां चिरकौमार्य–व्रत का अवलम्बन करेंगी, वे ही इस मठ की शिक्षिकांए तथा परिचारिकांए बन जांएगी और गांव–गांव तथा नगर–नगर में शिक्षा केन्द्र खोलकर स्त्रियों की शिक्षा के विस्तार की चेष्टा करेंगी। चरित्र, शील, धार्मिकता उस प्रकार की परिचारिकाओं के द्वारा देश में यथार्थ स्त्री शिक्षा का प्रयास होगा। वे स्त्री मठ के सम्पर्क में जितने दिन रहेंगी, इतने दिन तक ब्राह्मचार्य की रक्षा करना इस मठ का अनिवार्य नियम होगा। धर्म परायणता, त्याग और संयम यहां की छात्राओं के अलंकार होंगे और सेवा धर्म इनके जीवन का व्रत होगा। इस प्रकार का आदर्श जीवन देखने पर उनका हर कोई सम्मान करेगा। ऐसा कोन व्यक्ति होगा जो उन पर अविश्वास करेगा ? देश की स्त्रियों का इस प्रकार का जीवन गठित हो जाने पर तभी तो तुम्हारे देश में सीता, सावित्री, गार्गी का फिर से उद्भव हो सकेगा! आधुनिक दिशा हीन, संस्कार हीन, युवा–युवतिया कितनी दयनीय बन गई है, ये तुम एक बार पश्चिम देशों की यात्रा कर लेने पर ही समझ सकोगें। स्त्रियों की इस दुर्दशा के लिए हमारा समाज ही जिम्मेदार हैं। हमारे देश की स्त्रियों को फिर से जागृत करने का भार भी तुम ही पर है। इसलिए तो मैं कह रहा हूँ बस काम में लग जाओं। क्या होगा समाज का व्यर्थ में केवल कुछ वेद–वेदान्ती को रखकर ?

''सर्व प्रथम स्त्री जाति को सुशिक्षित बनाओं फिर वो स्वंय कहेंगी कि उन्हें किन सुधारों की आवश्यकता है। तुम्हें उनके प्रत्येक कार्य में हस्तक्षेप करने का क्या अधिकार है ?'' उन्नति के लिए सबसे पहले स्वतन्त्रता की आवश्यकता होती है। पवित्र और सतीत्व तो भारतीय नारी की वह बहुमुल्य निधि है, जो उसे अतीत काल से परम्परा से प्राप्त हुई है। इसीलिए स्वभावतः वह उसे समझती है। सर्व प्रथम हमे उनमे इस आदर्श के प्रति प्रगाढ श्रद्धा और भक्ति उत्पन्न करनी चाहिए। यदि वह इस आदर्श पर दृढ़ से गई, तो इसके फल स्वरूप उनका चरित्र इतना बलवान और दृढ़ होगा कि उसके प्रभाव से वह अपने प्राणों की आहुति देकर भी अपने पावित्य और सतीत्व की रक्षा करना अपना धर्म समझेंगी–चाहे वो विवाहित हो अथवा अविवाहित रहने का दृढ़ संकल्प धारण किये हो[32]। भारत में स्त्री जीवन के आदर्श का आरंम्भ और अंत मातृत्व में ही होता है। प्रत्येक हिन्दू के मन में 'स्त्री' शब्द के उच्चारण में मातृत्व का स्मृण ही आता है। हमारे यहां परमात्मा को भी जगत माता जगत जननी आदि नामो से सम्बोधित किया गया है। नारी समाज के सम्बन्ध में स्वामी जी की उत्तियां आज भी प्रायः लगभग सवा सौ साल बाद भी आदर्शता से समाज में जीवन जीने के लिए उपयुक्त है।

आलोचना

स्वामी विवेकानन्द की स्त्री केन्द्रित सामाजिक संरचना तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक सामन्ति मानसिकता व पुरूष प्रधान मानसिकता हमारे भीतर है। समाज के हर वर्ग के अग्रणी लोगो को अपना–अपना दायित्व निभाना पड़ेगा तभी नारी शक्ति का सद्पयोग हो सकता है। आज हर क्षेत्र में नारी का वर्चस्व होने लगा है। इसका कारण स्वामी विवेकानन्द का युवाओं पर प्रभाव व समाज सुधारको का योगदान मुख्य रहा है। स्वतंत्रता के बाद से संविधान ने भी हमें इन सिद्धान्तों को अपनाने के लिये दिशा दी है। धीरे–धीरे हम स्वामी विवेकानन्द के उस दिखाये मार्ग पर भी सफलता पूर्वक अवश्य पहुँचेगे जहाँ से हमारा राष्ट्र हर ऊँचाई को छुऐगा जिसमें हमारी माताओं का योगदान अविमरर्णीय रहेगा।

निष्कर्ष

वर्तमान शोध पत्र का निष्कर्षण यह है कि स्वामी विवेकानन्द ने भारत के सशक्ति करण में स्त्रीयों की मुख्य भूमिका है। अगर हमारे राष्ट्र में अच्छी माताऐं होगी तो

समस्त भारतीय संताने अपने आप चरित्रवान, शिक्षित, बलशाली और कत्वर्यनिष्ठ होगीं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *विवेकानन्द साहित्य खंड 10–पृष्ठ 302*
2. *विवेकानन्द साहित्य अंग्रेजी खंड 9–पृष्ठ 202 का अनुवाद*
3. *विवेकानन्द साहित्य खंड 8–पृष्ठ 60 का अनुवाद*
4. *विवेकानन्द साहित्य खंड 1–पृष्ठ 310*
5. *विवेकानन्द साहित्य खंड 5–पृष्ठ 150*
6. *विवेकानन्द साहित्य–खण्ड 7, पृष्ठ –144–45*
7. *विवेकानन्द साहित्य खण्ड–7, पृष्ठ –144*
8. *विवेकानन्द साहित्य अंग्रेजी खंड 9–पृष्ठ 200–201 का अनुवाद*
9. *विवेकानन्द साहित्य खंड 10–पृष्ठ 200–201 का अनुवाद*
10. *विवेकानन्द साहित्य खंड 10–पृष्ठ 201 का अनुवाद*
11. *विवेकानन्द साहित्य खंड 10–पृष्ठ 201 का अनुवाद*
12. *विवेकानन्द साहित्य खंड 10–पृष्ठ 200 का अनुवाद*
13. *विवेकानन्द साहित्य खंड 6–पृष्ठ 181–182*
14. *विवेकानन्द साहित्य खंड 6–पृष्ठ 182*
15. *विवेकानन्द साहित्य खंड 6–पृष्ठ 185*
16. *विवेकानन्द साहित्य खंड 10–पृष्ठ 216*
17. *विवेकानन्द साहित्य खंड 6–पृष्ठ 182*
18. *विवेकानन्द साहित्य खंड 6–पृष्ठ 181*
19. *विवेकानन्द साहित्य खंड 1–पृष्ठ 324*
20. *विवेकानन्द साहित्य खंड 4–पृष्ठ 268*
21. *विवेकानन्द साहित्य खंड 6–पृष्ठ 186*
22. *विवेकानन्द साहित्य खंड 2–पृष्ठ 216*
23. *विवेकानन्द साहित्य खंड 4–पृष्ठ 268*
24. *विवेकानन्द साहित्य खंड 6–पृष्ठ 186*
25. *विवेकानन्द साहित्य खंड 2–पृष्ठ 315–316*
26. *विवेकानन्द साहित्य खंड 6–पृष्ठ 184*
27. *विवेकानन्द साहित्य खंड 6–पृष्ठ 185*
28. *विवेकानन्द साहित्य खंड 8–पृष्ठ 277*
29. *विवेकानन्द साहित्य खंड 8–पृष्ठ 277*
30. *विवेकानन्द साहित्य खंड 6–पृष्ठ 40*
31. *विवेकानन्द साहित्य खंड 10–पृष्ठ 216*